पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 01.03.2023 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

रक्त साक्षी पं. लेखराम बलिदान दिवस

सोमवार 6 मार्च 2023,
प्रातः 11 से दोपहर 2 बजे तक
आर्य समाज लाजपत नगर–2,
नई दिल्ली–110024
आप सादर आमंत्रित है
– अनिल आर्य, संयोजक

वर्ष-39 अंक-19 फाल्गुन-2079 दयानन्दाब्द 200 01 मार्च से 15 मार्च 2023 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.03.2023, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह का आर्य समाज ने किया अभिनंदन

महर्षि दयानन्द का संदेश ही मेरा संदेश है–राजनाथ सिंह

शनिवार 18 फ़रवरी 2023, महर्षि दयानन्द बोध दिवस व महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में 21 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी से भेंट की और उन्हे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र, शॉल, सत्यार्थ प्रकाश द्वारा अभिनंदन किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने आर्य समाज व परिषद की सामाजिक गतिविधियों की जानकारी दी। माननीय श्री राजनाथ सिंह ने आर्य समाज की प्रशंसा करते हुए कहा कि आर्य समाज का कार्य तो सबको आर्य यानी श्रेष्ठ बनाने का है हमे मन भेद न रखते हुए सबको साथ लेकर चलना चाहिए और मन बड़ा रखना चाहिए उन्होंने कहा कि ओम का जाप करने से आत्मिक शांति की अनुभूति होती है। उन्होंने महर्षि दयानन्द के संदेश को घर घर पहुंचाने का आह्वान किया। गायिका पिंकी आर्य ने मधुर गीत प्रस्तुत किया। प्रतिनिधि मंडल में ओम सपरा,प्रवीण आर्य,देवेन्द्र भगत,धर्मपाल आर्य, के के यादव, दुर्गेश आर्य, रामकुमार आर्य, हर्ष देव शर्मा, राधा भारद्वाज, राजेश मेहंदीरता, अरुण आर्य आदि उपस्थित थे।

करनाल में ऋषि बोध उत्सव व वीर शिवाजी जयंती सम्पन्न

वीर शिवाजी हिन्दुत्व के रक्षक बन कर आये–राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य
महर्षि दयानन्द ने कुरीतियों का निवारण किया– सांसद संजय भाटिया

रविवार 19 फ़रवरी 2023, आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के तत्वावधान में आर्य समाज सेक्टर 6, करनाल में 5 दिवसीय महर्षि दयानन्द बोध उत्सव व वीर शिवाजी जयंती समारोह का भव्य आयोजन किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि छत्रपति वीर शिवाजी का जीवन सभी के लिए आदर्श है उनका पूरा जीवन हिन्दुत्व की रक्षा में संघर्ष पूर्ण निकला।आज की वर्तमान परिस्तिथियों में उनका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। 19 वर्ष की आयु में मुगल साम्राज्य से संघर्ष और कई दुर्गों पर भगवा ध्वज फहराना रोमांचित करने की घटना थी।वीर शिवाजी ने ही छापेमारी युद्ध की शुरुआत की की थी।आज के युवाओं को वीर शिवाजी से प्रेरणा लेकर धर्म की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए।उन्होंने महर्षि दयानन्द जी को भी नमन करते हुए कहा कि सदियों बाद इतिहास में ऐसा ऋषि पैदा होता है। सांसद संजय भाटिया ने भी महर्षि दयानन्द जी के पद चिन्हों पर चलने का आह्वान किया। वैदिक विद्वान आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री (आगरा) ने भी अपने ओजस्वी विचारों से प्रेरणा दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा सन्यासी स्वामी आदित्य वेश ने की उन्होंने महर्षि दयानन्द की 200 वीं जयंती पर रचनात्मक कार्यों को हाथ में लेने का आह्वान किया। गायक बृज लाल कर्मठ के गीतों पर लोग झूम उठे। कार्यक्रम का कुशल संचालन महा मंत्री स्वतंत्र कुकरेजा ने किया व सभा प्रधान आनंद सिंह आर्य ने आभार व्यक्त किया। प्रमुख रूप से संजय बाटला, चौधरी लाजपत राय आर्य, शान्ति प्रकाश आर्य, ओम प्रकाश सचदेवा, सूरज गुलाटी, अरुण आर्य, सावित्री कुकरेजा, सूबे सिंह आर्य, रामकुमार आर्य, हरेंद्र चौधरी आदि उपस्थित थे।

धर्म की वेदी पर बलिदान हुए अमर शहीद रक्तसाक्षी पं. लेखराम आर्यमुसाफिर

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्यसमाज का अस्तित्व वेद के अस्तित्व पर विद्यमान है। वेद के बाद ऋषि मुनियों के ग्रन्थ व उनकी ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित मानव जीवन के सभी पक्षों पर मार्गदर्शन करने वाली सत्य मान्यताओं पर है। यदि किसी को शास्त्र वा शास्त्र ज्ञान उपलब्ध न हो तो उसे तर्क व युक्ति का सहारा लेकर अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिये और विधर्मियों से वैदिक धर्म की रक्षा करनी चाहिये। यह विचार ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना के समय प्रचलित किये जिसका आचरण आर्यसमाज के विद्वान व सभी अनुयायी स्थापना काल से करते चले आ रहे हैं। ऋषि दयानन्द जी के जीवन काल में स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय जी आदि महापुरुष ऋषि वा उनकी विचारधारा के सम्पर्क में आये और उन्होंने अपने विवेक से आर्यसमाज की विचारधारा के प्रचार प्रसार हेतु पूर्ण समर्पित भाव से काम किया। इसके बाद अनेक ज्ञात व अज्ञात विद्वान, पुरुष व स्त्रियां इससे जुड़ते रहे जिन्होंने न केवल आर्यसमाज की विचारधारा को अपनाया अपितु इसके आचरण व व्यवहार करने में अनेक प्रकार के कष्ट भी सहन किये। जिन लोगों ने आर्यसमाज को सर्वात्मा अपनाया और इसका प्रचार प्रसार किया उन्हें हम आर्यसमाज के महाधन नाम से सम्बोधित कर सकते हैं। आज यदि आर्यसमाज का अस्तित्व है और वह अपने स्वर्णिम इतिहास को समेटे हुए आगे बढ़ रहा है तो इसमें आर्यसमाज के महाधन वा बलिदानी प्रकृति के ऋषि भक्त विद्वानों का ही मुख्य योगदान है। इस लेख में हम आर्यसमाज के महाधन पं. लेखराम आर्यमुसाफिर के विषय में कुछ जानकारी दे रहे हैं। पं. लेखराम जी का जीवन आदर्श जीवन है जो सभी आर्यसमाज के विद्वानों, नेताओं एवं ऋषि भक्तों के लिए प्रेरणादायक है। उनके जीवन में आरम्भ से अन्त किसी प्रकार का कोई दाग व धर्म विरुद्ध आचरण नहीं है। उन्होंने अपने जीवन का एक एक पल वैदिक धर्म के प्रचार व उन्नति के लिए जीया। प्राणों की उन्होंने चिन्ता नहीं की। कहीं भी धर्मान्तरण की सूचना मिलती थी तो वह तत्काल वहां पहुंच कर लोगों को समझाते थे और जो लोग ईसाई व इस्लाम धर्म को किन्हीं भी कारणों से स्वीकार कर रहे होते थे, उन्हें इन मतों की यथार्थ स्थिति अर्थात् कमियां बताकर वैदिक धर्म की श्रेष्ठताओं का प्रतिपादन करते थे। यह भी वेदमत अनुयायियों का सौभाग्य है कि पडित लेखराम जी के लिखे कुछ ग्रन्थ सुलभ हैं। आर्य विद्वान पं. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने पं. लेखराम जी के सभी ग्रन्थों का संकलन व सम्पादन 'कुलियात आर्य मुसाफिर' नामक ग्रन्थ के रूप में किया है जिसका प्रकाशन परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा दो भागों में किया गया है। पं. लेखराम जी द्वारा लिखी गई ऋषि दयाननन्द जी की खोजपूर्ण वृहद जीवनी का प्रकाशन पृथक से किया जाता है। इससे पूर्व स्वामी ओमानन्द जी ने गुरुकुल झज्जर से तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी इस वृहद ग्रन्थ कुलियात आर्य मुसाफिर का प्रकाशन किया है।

पं. लेखराम जी ने अजमेर में ऋषि दयानन्द जी के दर्शन किये थे। ऋषि के दर्शन कर आप तृप्त व आनन्दित हुए थे। आपने ऋषि से कुछ प्रश्न किये। एक प्रश्न था कि आकाश और ब्रह्म दोनों व्यापक हैं। दोनों व्यापक सत्तायें एक स्थान पर एक साथ कैसे रह सकती हैं? ऋषि दयानन्द ने इस प्रश्न को समझाने के लिए भूमि से एक पत्थर उठाया और पं. लेखराम जी को दिखाकर कहा कि देखो इसमें अग्नि व परमात्मा व्यापक हैं या नहीं? इसका उत्तर हां में था। उन्होंने कहा कि बात वास्तव में यह है कि जो वस्तु जिससे सूक्ष्म होती है वह उसी वस्तुत में व्यापक हो सकती है। ऋषि का यह समाधान सुनकर पं. लेखराम जी को बहुत आनन्द हुआ। पं. लेखराम जी ने ऋषि से एक प्रश्न यह पूछा कि जीव और ब्रह्म की भिन्नता अर्थात् पृथक पृथक अस्तित्व का कोई प्रमाण बतायें। इसका उत्तर देते हुए ऋषि ने उन्हें कहा कि यजुर्वेद का सारा चालीसवां अध्याय जीव और ब्रह्म का भेद बताता है। पं. लेखराम जी ने ऋषि से पूछा कि अन्य मतों के लोगों को शुद्ध कर वैदिक धर्म में सम्मिलित करना चाहिये वा नहीं? इसका उत्तर ऋषि ने यह दिया कि अवश्य शुद्ध करना चाहिये। एक प्रश्न पंडित जी का यह भी था कि बिजली क्या वस्तु है और यह कैसे उत्पन्न होती है? ऋषि दयानन्द ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि विद्युत सभी स्थानों में है और रगड़ अर्थात् घर्षण से उत्पन्न होती है। बादलों की विद्युत् भी बादल और वायु के घर्षण से उत्पन्न होती है। इन प्रश्नों के अतिरिक्त भी पं. लेखराम जी ने कुछ और प्रश्न किये थे परन्तु वह प्रश्न व उनके उत्तर उन्हें स्मरण नहीं रहे। ऋषि दयानन्द जी ने पं. लेखराम जी को यह सलाह भी दी थी कि 25 वर्ष की आयु से पूर्व विवाह मत करना। लेखराम जी ने इस आज्ञा का पालन किया और 35 वर्ष की आयु में 26 वर्षीय लक्ष्मी देवी जी से विवाह किया था। लक्ष्मी देवी जी अपढ़ महिला थी। पं. लेखराम जी ने उन्हें स्वयं पढ़ाकर शिक्षित भी किया था।

पंडित लेखराम जी पुलिस विभाग में नौकरी करते थे। नौकरी करने से वेद प्रचार में बाधायें आती थीं। अतः आपने 24 दिसम्बर, 1884 को नौकरी से त्याग पत्र दे दिया था। त्यागपत्र देने के बाद वह नौकरी के सभी बन्धनों से मुक्त हो गये। अधिकारियों की गीदड़ भभकी पर भी अब पूर्ण विराम लग गया था जो सेवाकाल में उन्हें मिला करती थी। अब आप वैदिक धर्म प्रचार, धमान्तरितों की शुद्धि व धर्म रक्षा के कार्यों के लिए जब जहां जाना चाहें, आ—जा सकते थे।

पं. लेखराम जी ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य यह किया कि उन्होंने देश भर में घूम कर ऋषि दयानन्द जी की जीवन विषयक सामग्री संग्रहीत की। कई वर्षों तक वह इस कार्य के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते जाते रहे। इस कार्य को करने में उन्हें कितने कष्ट सहन करने पड़े, इसका हम अनुमान भी नहीं कर सकते। इस कार्य में उन्हें सफलता मिली और प्रभूत सामग्री एकत्र हो गई। इस सामग्री के आधार पर उन्होंने ऋषि दयानन्द का प्रथम विशालकाय जीवन चरित्र उर्दू में लिखा जिसका हिन्दी अनुवाद ऋषि के एक शिष्य ने किया जिससे यह हिन्दी पाठकों के लिए सुलभ हो सका। डा. भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित और आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के संस्थापक लाला दीपचन्द आर्य जी द्वारा प्रकाशित यह वृहद हिन्दी जीवन चरित्र भी ऋषि दयानन्द विषयक साहित्य के ही समान उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है। बाद के सभी जीवनीकारों ने इसी जीवन चरित्र की सहायता से अपने जीवन चरित्र लिखे हैं। इस जीवन चरित्र की शैली भी अद्भुद है। पं. लेखराम जी स्थान—स्थान पर जाकर उन लोगों से मिलते थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द जी को साक्षात् देखा था और उनके विचारों वा व्याख्यानों को सुना था। कुछ ने उनकी संगति में भी समय व्यतीत किया था। लेखराम जी ने उन सभी वा अधिकांश व्यक्तियों से मिलकर ऋषि दयानन्द विषयक उनकी स्मृतियों को लेखबद्ध कराया और उन्हें यथावत् अपने जीवन चरित में स्थान दिया। यह बृहद जीवन चरित पढ़ते हुए आरम्भ से अन्त तक पाठक का मन ऋषि दयानन्द और लेखराम जी के प्रति श्रद्धा से भरा रहता है। हमारा सौभाग्य है कि हमने इसे आद्योपान्त पढ़ा है और इसे पढ़कर हमें सन्तोष व सुख की अनुभूति हुई। इसी जीवन चरित्र को लिखते हुए ही एक विधर्मी ने उनके पेट में छुरा भोंक कर उनकी हत्या कर दी थी। इस बलिदान के कारण पण्डित जी को रक्तसाक्षी धर्मवीर पं. लेखराम के गौरवपूर्ण नाम से सम्बोधित किया जाता है।

पं. लेखराम जी का जन्म विक्रमी संवत् 1915 की चौत्र मास में 8 तारीख को हुआ था। अंग्रेजी वर्ष सन् 1859 का था। आपका जन्म स्थान रावलपिण्डी का सैदपुर ग्राम है। आपने मदरसे से उर्दू व फारसी की शिक्षा प्राप्त की। 21 दिसम्बर, सन् 1875 को आप पुलिस में नौकरी पर लगे थे। आप ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़कर उनके अनुयायी बने थे। सन् 1881 में आपने पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। आपने पेशावर आर्यसमाज की ओर से 'धर्मोपदेशक' नामक मासिक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन भी किया था। यह सब करते हुए आप पेशावर में आर्यसमाज के सत्संगों में व्याख्यान भी देते थे। यह व्याख्यान आप ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के आधार पर किया करते थे। एक बार आप अपने व्याख्यान में शराब का खण्डन कर रहे थे। वहां एक सेना का कप्तान उपस्थित था। उस पर आपके व्याख्यान का ऐसा प्रभाव पड़ा की उसने मदिरापान छोड़ दिया। पं. लेखराम जी व्याखान देने के साथ शास्त्रार्थ में भी रूचि रखते थे। पंडित जी की भावना थी कि अखिल विश्व में 'ओ३म्' का झण्डा फहराये और सारा संसार वैदिक धर्मी हो जाये। जिन दिनों पण्डित लेखराम जी पेशावर में थे, उन दिनों इनके पास ऋषि दयानन्द के दो पत्र आये। एक में पंडित जी को गोरक्षा आन्दोलन चलाने और गोहत्या बन्द करने वाले मेमोरेण्डम पर हस्ताक्षर कराने के बारे में था और दूसरा हिन्दी का प्रचार करने के विषय में था। पण्डित जी ने ऋषि की आज्ञा के अनुरूप उत्साह से दोनों कार्यों को किया। आर्य हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए आपने पूरे मन, वचन व कर्म से कार्य किया। आपने विधर्मियों से शास्त्रार्थ किये, धर्म पिपासुओं को व्याख्यान दिये और इसके साथ ही धर्मान्तरित किये जाने वाले हिन्दुओं को आप उनके गांव व स्थानों पर जाकर समझाते थे। ईसाई व इस्लाम मत का प्रमाणों व युक्तियों से आप खण्डन भी करते थे।

आपकी वैदिक धर्म के प्रति लगन, धर्म प्रचार की भावना एवं आपके प्रभावशाली व्याख्यान व तर्कों को सुनकर लोग वैदिक धर्म में बने रहने के लिए सहमत होते थे। पंडित जी की विदेश जाकर भी प्रचार करने की इच्छा थी। आप अरब देश में जाकर भी प्रचार करना चाहते थे। आपने सन् 1891 में स्वामी श्रद्धानन्द जी के सहयोग से कुम्भ के मेले में प्रचार करने सहित उसके लिए प्रभूत चन्दा भी संग्रहित किया था। वर्तमान में पाकिस्तान के सिन्ध क्षेत्र में जाकर भी आपने प्रचार किया था और वहां ईसाई व मुसलमान बन रहे हिन्दुओं को वैदिक धर्म की महत्ता समझाकर उन्हें वैदिक धर्म के पालन में स्थिर किया था। लोगों को वैदिक धर्म में स्थिर रखने में आपने अनेक अवसरों पर सफलतायें प्राप्त की थीं। ऐसे भी अवसर आये कि पूरा गांव ईसाई मत स्वीकार कर रहा है। पंडित जी के उस गांव में पहुंचने और लोगों को समझाने का प्रभाव यह हुआ कि वहां लोंगों ने अपना इरादा बदल दिया। पंडित जी ने राजपूताने और काठियावाड़ में भी वैदिक धर्म का प्रचार किया था। पंजाब में उन दिनों हिन्दुओं में मासाहार की बुराई विद्यमान थी। पंडित जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अनुरोध पर मांसाहार के विरोध में अनेक स्थानों पर जाकर व्याख्यान दिये और मांस भक्षण को वेद—विरुद्ध सिद्ध करने के साथ युक्तियों से इसे महापाप सिद्ध किया। देश विभाजन से पूर्व एक बार आप स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ पाकिस्तान के क्वेटा स्थान पर आर्यसमाज के उत्सव में आये थे। तब यहां आपके अनेक विषयों पर 13 व्याख्यान हुए थे। यहां से बिलोचिस्तान के अनेक स्थानों पर जाकर भी आपने प्रचार किया था।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 513वां वेबिनार सम्पन्न

'स्वामी श्रद्धानन्द बहुआयामी व्यक्तिव' पर गोष्ठी सम्पन्न

त्याग, बलिदान, समर्पण के प्रतीक थे स्वामी श्रद्धानन्द–नरेंद्र आहूजा विवेक

सोमवार 20 फरवरी 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'स्वामी श्रद्धानंद बहुआयामी व्यक्तित्व' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी संपन्न हुई।यह करोना काल से 511 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता नरेंद्र आहूजा विवेक (पूर्व राज्य ओषधि नियंत्रक हरियाणा सरकार) ने कहा कि क्रांतदर्शी देव दयानन्द के उपरान्त दूसरा सबसे बड़ा आर्य स्तम्भ स्वामी श्रद्धानन्द हैं। पूर्व में महात्मा मुंशीराम के नाम से विख्यात देव दयानन्द के मानस पुत्र, नवजागरण के अग्रदूत, पंजाब में आधुनिक चेतना के निर्माता, स्वाधीनता संग्राम सेनानी, क्रांतिकारी, निर्भय आर्य सन्यासी, निर्भीक पत्रकार, हिन्दू मुस्लिम एकता के सूत्रधार, श्रद्धाव्रत के पालक, क्रांतदर्शी युगपुरुष, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के पुनः संस्थापक, क्रियात्मक जीवन के धनी, करुणा त्याग सत्य के पोषक, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचारक, सामाजिक चेतना के नायक, आर्य समाज के उज्ज्वल रत्न, सर्वस्व त्यागी महादानी, सामाजिक समरसता के प्रतीक, अछूतोद्धारक, कन्या शिक्षा के पक्षधर, वैदिक सिद्धान्त प्रचारक, शुद्धि आंदोलन के प्रणेता,आत्म बलिदानी थे। नरेन्द्र विवेक ने आह्वान किया कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर हम सभी आर्यों को उनके इन कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए। मुख्य अतिथि अनिता रेलन व अध्यक्ष प्रवीण आर्य गाजियाबाद ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला।केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने संचालन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता, कौशल्या अरोरा, कुसुम भंडारी, रजनी चुघ, अंजू आहूजा, जनक अरोड़ा, बिंदु मदान, ईश्वर देवी आदि के मधुर भजन हुए।

आर्य समाज ए टी एस इन्दिरापुरम का उत्सव सम्पन्न

राष्ट्र की एकता अखंडता के लिए कार्य करें– राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शनिवार 25 फरवरी 2023, आर्य समाज एटीएस एडवांटेज सोसायटी एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के सानिध्य में यज्ञ, भजन एवं प्रवचन एटीएस मन्दिर, इन्दिरापुरम के सत्संग भवन में हर्षोल्लास से संपन्न हुआ। विदुषी शिप्रा गुप्ता के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ उन्होंने कहा कि यज्ञ और योग अपनाने से व्यक्ति का कल्याण होगा।यज्ञ के मुख्य यज्ञमान समाज सेवी विनोद त्यागी रहे। दिल्ली से पधारी सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या ने साज बाज पर ईश्वर भक्ति के मधुर भजन प्रस्तुत किये। मुख्य अतिथि अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद) ने कहा कि आज राष्ट्र विषम परिस्थितियों से निकल रहा है आर्य जनों को राष्ट्र की एकता अखंडता के लिए कार्य करना है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र आज महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200 वीं जयन्ती मना रहा है उनकी शिक्षाओं को आम आदमी तक पहुंचाने की आवश्यकता है। पाखंड अंधविश्वास बढ़ रहे हैं इसके लिए जाग्रति लाना आवश्यक है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि आज अपने बच्चों को संस्कारवान बनाने की आवश्यकता है। साथ ही वह अपनी संस्कृति से भी जुड़ें।उन्हें अपने भारतीय संस्कृति के गौरव गान का पता होना ही चाहिए। बिना संस्कारों के व्यक्ति पशु के समान है।चरित्र हीनता,बलात्कार की घटनाएं नैतिक शिक्षा व संस्कारों की कमी के कारण ही है।सभी माता पिता व शिक्षक गण इस समस्या का हल निकालने में सक्षम हैं,आवश्यकता है जमीन पर कार्य करने की। अध्यक्षता कर रहे प्रसिद्ध समाज सेवी श्री विनोद त्यागी ने कहा कि योग जीवन का अभिन्न अंग है, योग से स्वयं जुड़ें व परिवार को भी जोड़ें। कार्यक्रम का संचालन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के कोषाध्यक्ष देवेन्द्र गुप्ता ने किया। प्रमुख रूप से अरविन्द गर्ग, विजय भारती, अभिषेक गुप्ता, योगेश गुप्ता, विजय छाबड़ा, रेखा सिंह, स्नेहा अरोड़ा, अनुश्री खरबंदा, विनीत भगत, त्रिलोक आर्य, विवेकानन्द शास्त्री, माया आदि उपस्थित थे।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

आपने एक स्थान सीबी पर दो मुसलमानों को भी वैदिक धर्म की श्रेष्ठता समझाकर शुद्ध किया और उन्हें वैदिक धर्मी बनाया। आपने भारत को आर्य बनाने की समस्या पर विचार कर इसके लिए सात उपाय सुझाये थे। सातवां उपाय था कि दान की ठीक–ठीक व्यवस्था की जाये। दान के धन को व्यर्थ के कार्यों में नष्ट न किया जाये। आपने धर्म प्रचार कर सियालकोट में सैकड़ों सिखों को मुसलमान होने से भी बचाया था। पंडित लेखराम जी ने अपने नाम के 'लेख' शब्द के अनुरूप लेखन का कार्य भी किया। आपने छोटी–बड़ी लगभग 33 पुस्तकें लिखी हैं। सन् 1897 में लाहौर में एक मुस्लिम युवक आपके निवास पर धर्मान्तरण की इच्छा से आया। वह रात दिन आपके साथ रहने लगा। 6 मार्च को पंडित जी ने ऋषि जीवन का लेखन का कार्य किया। काम से थककर वह खड़े हुए और अंगडाई ली। इस मुसलिम युवक ने कम्बल ओढ़ रखा था और उसमें खंजर छिपा रखा था। उसने हाथ से खंजर निकाला और पंडित जी के पेट में घोप कर उसे धुमा दिया। इससे पेट में कई घाव हो गये। आंते कट कर बाहर को आ रही थी। पंडित जी ने एक हाथ से अंतड़ियों को अन्दर किया और दूसरे हाथ से कातिल को पकड़ लिया। कुछ क्षण में कातिल ने अपने आप को छुड़ा लिया और भाग गया। घायलावस्था में आपको लाहौर के अस्पताल ले जाया गया। इस अवसर पर आपके परम मित्र महात्मा मुंशीराम जी जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुए, आपके पास बैठे थे। आप घटना के बाद से निरन्तर ओ३म् विश्वानि देव और गायत्री मंत्र का पाठ कर रहे थे। रात्रि 2 बजे आपने प्राण त्याग दिये। इस प्रकार ऋषि दयानन्द का एक परम भक्त वैदिक धर्म की वेदि पर बलिदान हो गया। पंडित जी ने ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलकर वैदिक धर्म की प्रशंसनीय सेवा की। पं. लेखराम जी के बलिदान ने सिद्ध कर दिया कि वैदिकधर्म के विरोधियों के पास आर्यसमाज के सिद्धान्तों, मान्यताओं व आक्षेपों का समुचित उत्तर नहीं है। वैदिक धर्म और आर्यसमाज वस्तुतः धर्म विषयक दिग्विजयी विचारधारा है और इसके अनुयायी अपना रक्त व प्राण देकर भी इसकी रक्षा करते हैं। हम आर्यसमाज के महाधान पंडित लेखराम जी को अपने हृदय से नमन करते हैं और अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

– 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोन:09412985121

167वां स्वामी श्रद्धानन्द का जन्मोत्सव धूम धाम से सम्पन्न

शुद्धि आंदोलन पुनः चलाने की आवश्यकता –बिमलेश बंसल

राष्ट्रीय एकता और अखंडता की मिसाल थे स्वामी श्रद्धानन्द –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बुधवार, 22 फरवरी 2023, गुरुकुल कांगडी हरिद्वार के संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का 167 वॉ जन्मोत्सव आर्य समाज,अशोक विहार, फेस–1, दिल्ली में आर्य नेता ओम सपड़ा की अध्यक्षता में धूम धाम से संपन्न हुआ। वैदिक विदुषी आचार्या विमलेश बंसल (दर्शनाचार्या) ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का प्रारंभ किया उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद के शुद्धि आन्दोलन (घर वापिसी) को तेज कर धर्मांतरण के अभिशाप से देश को मुक्ति दिलाएंगे।इस कार्य के लिए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली, सेवा कार्यों के विस्तार के साथ हवन व सत्संगों के माध्यम से वैदिक संस्कारों व राष्ट्रीय जीवन मूल्यों के प्रति सजगता लानी होगी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन भटकते लोगों के लिये प्रकाश पुंज के समान है।हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर देश की एकता अखंडता के लिये कार्य करना चाहिए,यह गर्व की बात है कि आर्य समाज के लोगों में देश भक्ति का जज्बा कूट कूट कर भरा हुआ है जो अत्यंत प्रशंसनीय है। स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की ज्वलंत मिसाल थे।स्वामी श्रद्धानन्द ने विश्व बंधुत्व का जो संदेश हम सबको दिया तथा नैतिकता का पाठ पढ़ाया वह केवल भारत के पास है,पूरे विश्व मे ओर कहीं नहीं मिलेगा। उन्होंने दलितों उद्धार के सराहनीय कार्य किया। आर्य नेता ओम सपड़ा (प्रधान, उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल) ने अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया की हमें जो विचार महर्षि दयानन्द ओर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिए हैं उसे आज जीवन में लागू करने की आवश्यकता है,उनके जन्मोत्सव पर उन्हें याद करने का अर्थ है सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना आपसी भाई चारे से समाज व देश को मजबूत बनाएं, तभी महापुरुषों का जन्मोत्सव मनाना सार्थक हो सकती है।स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः जीवित किया व समान शिक्षा पद्धति को बढ़ावा दिया यही उनकी कथनी और करनी की समानता का प्रेरक उदाहरण है।उन्होंने कहा कि आज फिर से शुद्धि आंदोलन चलाने की आवश्यकता है जिससे जो लोग किसी कारण से विधर्मी हो गए थे उन्हें वापिस हिन्दू धर्म मे लाया जा सके।स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि आंदोलन की शुरुआत की ओर घर वापसी का मार्ग प्रशस्त किया। गायिका प्रवीन आर्या, बिमला आहूजा,सतीश शास्त्री,प्रवीण आर्य (गाजियाबाद), कृष्णा गांधी, राज अरोड़ा ने अपने गीतों से समा बांध दिया। आर्य नेता प्रेम सचदेवा (प्रधान,आर्य समाज अशोक विहार) ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द स्वामी दयानन्द के ऐसे शिष्य थे जिन्होंने ऋषियों की परम्पराओं का पालन करते हुऐ गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की। मंत्री जीवन लाल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद कहते थे यदि आपकी परमपिता परमात्मा में पूर्ण श्रद्धा है तो भगवान आपके सारे कार्य पूर्ण करेंगे। इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री वीरेंद्र आहूजा, डीके भगत,आशा भटनागर, विजय अरोड़ा, सुधीर सक्सेना,किरण आनन्द, कांता भाटिया,राज तनेजा, कुसुम भण्डारी,आर के भण्डारी,प्रतिभा सपड़ा, डिम्पल भंडारी,पुष्पा सक्सेना, सीमा ढींगरा, देवेन्द्र श्रीधर, रामकुमार आर्य, सोनिया संजू ,अनिता आदि उपस्थित रहे। शांतिपाठ एवं ऋषि लंगर के साथ समारोह संपन्न हुआ।

आर्य समाज ब्रह्मपुरी व गुरुकुल का उत्सव सम्पन्न

रविवार 26 फरवरी 2023, पूर्वी दिल्ली की सक्रिय आर्य समाज ब्रह्म पुरी दिल्ली का वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ यहाँ गुरुकुल की रचनात्मक गतिविधि का भी संचालन होता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य भी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए व शुभकामनाएं दीं। स्वामी विश्वानन्द जी, राकेश आर्य सम्पादक उगता भारत ,रामकुमार आर्य आदि ने अपने विचार रखे। आचार्य सुन्दर शास्त्री ने कुशल संचालन किया। अंगद सिंह आर्य , रामा नन्द आर्य, पलाराम, अजय यादव, अंकुर आर्य आदि उपस्थित थे थे।

प्रकाशनादि का विवरण फार्म-4

1. प्रकाशन स्थान	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
2. प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
3. मुद्रक व प्रकाशक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
4. सम्पादक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
5. उन व्यक्तियों के नाम, पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों।	:	केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी.), दिल्ली

मैं अनिल कुमार आर्य एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 01-3-2023 **अनिल कुमार आर्य,** प्रकाशक

कृपया अपनी प्रिय पत्रिका "युवा उद्घोष" को नियमित बनाये रखने के लिये केवल 100/– रू का सहयोग "युवा उदघोष, A/N0. 20024363377, IFSCode. MAHB0000901, बैंक आफ महाराष्ट्र, डा. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009 पर आनलाईन भेजें।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970